Page No.:
Date: / /

Q सामाजिक व्यवस्था के प्रमुख वर्गीकरणों का वर्णन कीजिए।
(Describe the chief classification of social system")

Ans विभिन्न विद्वानों द्वारा सामाजिक व्यवस्था का वर्गीकरण अलग-अलग ढंग से किया जाता है। उनका वर्णन इस प्रकार है—

(1) सोरोकिन का वर्गीकरण (Sorokin's classification): सांस्कृतिक व्यवस्था के आधार पर सोरोकिन ने सामाजिक व्यवस्था का वर्गीकरण किया है। अपने वर्गीकरण में इन्होंने तीन स्वरूपों का वर्गीकरण किया है—

(i) चेतनात्मक (sensate) व्यवस्था में भौतिक व इन्द्रिय सुख प्राप्ति पर अधिक जोर दिया जाता है।

(ii) भावनात्मक (Emotional) व्यवस्था में संस्कारों का संबंध विचार, भावना, आत्मा या ईश्वर से होता है।

(iii) आदर्शात्मक (Idealistic) व्यवस्था दोनों पूर्व अवस्थाओं के बीच की व्यवस्था है।

(2) उद्विकासीय वर्गीकरण (Evolutionary classification): मार्गन ने सामाजिक व्यवस्था के उद्विकासीय वर्गीकरण का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार, समाज का उद्विकास तीन अवस्थाओं में हुआ है जो निम्न प्रकार है—

(i) जंगली सामाजिक व्यवस्था (Savage Social System.
(ii) असभ्य सामाजिक व्यवस्था (Barbarian Social System)
(iii) सभ्य सामाजिक व्यवस्था (Civilized Social System)
इसी आधार पर ऐतिहासिक वर्गीकरण को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है-
(i) शिकार करने और फल इकट्ठा करने की सामाजिक व्यवस्था :- इस प्रकार की व्यवस्था अत्यधिक अनिश्चित और अस्थिर होती है।
(ii) चरागाह की स्थिति की सामाजिक व्यवस्था - इस व्यवस्था में लोगों को पशुओं को पालने की कला का ज्ञान होता है।
(iii) कृषि स्तर की सामाजिक व्यवस्था - यह अवस्था पर्याप्त विकसित और निश्चित होती है।
(iv) औद्योगिक स्तर की सामाजिक व्यवस्था - इस व्यवस्था में सामाजिक तत्व में फेर बदल हो जाता है। इसके स्थान पर राजनैतिक संस्था, पद कार्य आदि का महत्व बढ़ जाता है।
(3) दुर्खीम का वर्गीकरण - दुर्खीम ने अपनी व्यवस्था में दो भेदों का उल्लेख किया है। ये इस प्रकार है।

(i) यांत्रिक सामाजिक व्यवस्था (Mechanical Social system)

(ii) सावयवी सामाजिक व्यवस्था (Organic Social system)

पहले समाज की सदस्य संख्या और आवश्यकताएँ सीमित होती थी। इस कारण श्रम-विभाजन की आवश्यकता नहीं होती थी। प्रथा परम्परा धर्म आदि पर लोगों पर प्रभुत्व था और लोग अनवत कार्य करते रहते थे। यही यांत्रिक सामाजिक व्यवस्था थी। परन्तु नई नई आवश्यकताएँ बढ़ने लगी वैसे-वैसे श्रम विभाजन का विशेषीकरण हुआ। साथ ही एकात्मिक आवश्यकताओं ने समाज के सदस्यों को एक दूसरे से संबंधित तथा एक दूसरे पर निर्भर कर दिया। यही सावयवी सामाजिक व्यवस्था है।

Vijaut Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Zoology
26/06/2021